नाम माहात्म्यम्

* उपदेश संग्रह *

* दोहा *

तुलसी गुरु प्रतापसे, ऐसी जान पड़ी।
नहीं भरोसा श्वासका, आगे मौत खड़ीं॥
तुलसी बिलम न कीजिये, भजिये नाम सुजान।
जगत मजूरी देत है, क्यों राखें भगवान॥
परारब्ध न्योतो दियो, जब लग रहे शरीर।
तुलसी चिन्ता मत करो, भज लो श्री रघुबीर॥
माला मनसे लड पडी, तू मत बिसरे मोय।
बिना शस्त्र के शूरमा, लड़त न देखा कोय॥
भजन करन के आलसी, भोजनकुं हुशियार।
तुलसी ऐसे पतितको, बार बार धिक्कार॥

अरब खरबलों द्रव्य है, उदय अस्तलों राज।
बिनाभक्ति भगवानकी, सभी नरकका साज॥
तुलसी या संसारमें, पांच रतन हैं सार।
संत मिलन अरु हरि भजन, दया दीनउपकार॥
तुलसी या जग आयके, कर लीजे दो काम।
देने को टुकड़ा भला, लेनेको हरि नाम॥
सत्य बचन आधीनता, परत्रिय मात समान।
इतने में हरि ना मिलें, तुलसीदास जमान॥
राम नाम मणि दीप धर, जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहिरो, जो चाहत उजियार॥
धन यौवन यों जायगो, जा बिधि उड़त कपूर।
नारायण गोपाल भज, क्यों जग चाटै धूर॥
राम नाम को अंक है, सब साधन हैं सून।
अंक गए कछु हाथ नहिं अंक रहे दशगून॥
राम नाम जपते रहौ, जबलग घट में प्रान।
कबहुं तो दीनदयाल के, भनक परैगी कान॥
काम क्रोध लोभादि मद, प्रबल मोह की धार।
तिनमें अति दारुण दुखद, मायारूपी नार॥

राम भरोसो राख ले, अपने मनके माहिं।
कारज सबै संवार ही, बिगरे भी कछु नाहिं॥
राम भरोसा छांड़के, करै भरोसा और।
सुख सम्पति की क्या कहूं, नरक न पावै ठौर॥
तनकर मनकर बचनकर, देत न काहू दुःख।
तुलसी पातक झरत हैं, देखत उनका मुःख॥
एक भरोसा एक बल, एक आश विश्वास।
स्वाति सलिल हरिनाम है, चातक तुलसीदास॥
तुलसी सोई चतुर है, संत चरण लवलीन।
परमन परधन हरनको, वेश्या बड़ी प्रवीन॥
पानी बाढ़ो नाव में, घर में बाढ़ो दाम।
दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानो काम॥
पढ़ पढ़के सब जग मुवा, पंडित भया न कोय।
ढाई अच्चर प्रेम के, पढ़ै सो पंडित होय॥
क्या मुख ले हँस बोलिये, तुलसी दीजे रोय।
जन्म अमोलक आपना, चले अकारथ खोय॥
नारायण हरि भजन में, तू जनि देर लगाय।
क्या जाने या देर में, श्वास रहै कि जाय॥

अपनो साखी आप तू, निज मन माहिं विचार ।
नारायण जो खोट है, ताकूं तुरत निकार ॥
नारायण तू भजन कर, कहा करेंगे कूर ।
असतुति निंदा जगतकी, दोउअन के शिर धूर ॥
दो बातन को भूल मत, जो चाहत कल्यान ।
नारायण एक मौत को, दूजे श्री भगवान ॥
मगन रहे नित भजन में, चलत न चाल कुचाल ।
नारायण ते जानिये, यह लालन के लाल ॥
विद्यावंत स्वरूप गुण, सुत दारा सुख भोग ।
नारायण हरि भक्ति बिन, यह सबही हैं रोग ॥
चार दिनन की चांदनी, यह सम्पति संसार ।
नारायण हरि भजन कर, जासों होय उबार ॥
नारायण सतसंग कर, सीख भजन की रीत ।
काम क्रोध मद लोभ में, गई आरबल बीत ॥
नारायण जब अंत में, यम पकरेंगे बांहि ।
तिनसों भी कहियो हमें, अभी सोफतों नांहि ॥
बांट खाय हरिको भजे, तजै सकल अभिमान ।
नारायण ता पुरुष को, उभय लोक कल्यान ॥

बहुत गई थोरी रही, नारायण अब चेत।
काल चिरैया चुग रही, निशि दिन आयू खेत॥
तेरे भावें कुछ करो, भलो बुरो संसार।
नरायण तू बैठिके, अपनो भवन बुहार॥
संत सभा झांकी नहीं, कियो न हरि गुण गान।
नारायण फिर कौन बिधि, तू चाहत कल्यान॥
नारायण मैं सच कहूं, भुजा उठाय के आज।
जो जिय बनै गरीब तू, मिलें गरीब निवाज॥
विद्या पढ़ करते फिरै, औरन को अपमान।
नारायण विद्या नहीं, ताहि अविद्या जान॥
कथनी कथ केते गए, कर्म उपासना ज्ञान।
नारायण चारों युगन, करणी है परमान॥
जिनको मन निजवश भयो, तज करविषयविलास
नारायण ते घर रहो, चाहे करौ बनबास॥
नारायण सुख भोग में, मस्त सभी संसार।
कोउ मस्त वा मौज में, देखो आँख पसार॥
नारायण या जगत में, यह दो बस्तू सार।
सबसों मीठो बोलिबो, करबो पर उपकार॥

नारायण परलोक में, यह दो आवत काम।
देना मुट्ठी अन्न की, लेना भगवत नाम॥
कियो न मानत औरको, परहित करत न आप।
नारायण ता पुरुष को, मुख देखे सों पाप॥
नारायण दो बातको, दीजै सदा बिसार।
करी बुराई और ने, आप कियो उपकार॥
तज पर अवगुण नीरको, क्षीर गुणन सों प्रीत।
हंस संत की सर्वदा, नारायण यह रीत॥
तनक मान मनमें नहीं, सबसों राखत प्यार।
नारायण ता संत पै, बार बार बलिहार॥
अति कृपालु संतोष बृति, युगल चरणमें प्रीत।
नारायण ते संत वर, कोमल बचन विनीत॥
जिनके पूरण भक्ति है, ते सब सों आधीन।
नारायण तज मान मद, ध्यान सलिल के मीन॥
नारायण हरि भक्ति की, प्रथम यही पहिचान।
आप अमानी हो रहै, देत और को मान॥
नारायण होवै भले, जो कछु होवन हार।
हरि सों प्रीत लगायके, अब कहा सोच विचार॥

जो शिर सांटे हरि मिलें, तो पुनि लीजै दौर।
नारायण ऐसी न हो, गाहक आवै और॥
लगन लगन सबही कहैं, लगन कहावे सोय।
नारायण जा लगन में, तन मन दीजे खोय॥
नर संसारी लगन में, दुख सुख सहैं करोर।
नारायण हरि प्रीत में, जो होवै सो थोर॥
नारायण हरि लगन में, ये पांचों न सुहात।
विषय भोग निद्रा हंसी, जगत प्रीत बहु बात॥
दादू नीका नाम है, आप कहैं समुझाय।
और आरंभ सब छोड़के, हरिजी सों चितलाय॥
श्वासो श्वास सम्हाल तो, इक दिन मिलिहै आय।
सुमिरन रस्ता सहज का, सद्गुरु दिया बताय॥
जीवत माटी हो रहो, सांई सन्मुख होय।
दादू पहिले मर रहौ, पाछे मरे सब कोय॥
नोउं दुवारे नरकके, निशि दिन बहे बलाय।
सोच कहां लग कीजिये, नाम सुमिर गुणगाय॥
दादू नीको नाम है, तीन लोक तत्सार।
रात दिवस रटिवो करो, रे मन यही बिचार॥

दादू नीका नाम है, सो तू हिरदय राख।
पाखंड प्रपञ्च दूरकर, सुन साधुजन कीसाख॥
नारायण को ध्यान धर, पल पल नाम चितार।
सार एक हरि नाम है, जगत विषय बिन सार॥
साधुजन दया निज पर करें, अपना करें उबार।
भजें हरी हर अहर्निश, तजें कुटिल परिवार॥
भांग तमाखू छूतरा, उतर जात परभात।
नाम खमीरी ना मिटे, चढ़ी रहत दिन रात॥
भांति भली हरि नाम सों, काय कसौटी दुःख।
नाम बिना किस कामकी, दादू संपति सुख॥
जो तोकों कांटा बुवे, ताको बो तू फूल।
तोकों फूल के फूल हैं, वाही को तिरशूल॥
मूरखका मुख बांबिया, निकसत बचन भुजंग।
ताकी औषधि मौन है, जहर न व्यापै अंग॥
कहा करै बैरी प्रबल, जो सहाय बल बीर।
दशहजारगजवल घट्यो, घट्यो न दशगजचीर॥
गरीब लौ लागी तबजानिये, जगसों रहे उदास।
नाम रटे निर्भय कला, हरदम हीरा पास॥

गरीब लौ लागी तब जाणिये, जगसों रहेउदास।
नाम रटे निर द्वंद हो, अनहद पुर में बास॥
आठ पहर सुमिरण करै, बिसरै ना च्चण एक।
अष्टादश अरु चार में, सहजो यही विशेष॥
नाम जपा जिन सब किया, योग यज्ञ आचार।
जप तप तीरथ परशुराम, सभी नाम की लार॥
पढ़ना गुनना सहज है, फिर आवै चारों धाम।
करडा देखा पर्शुराम, राम भजन का काम॥
संयम नियम बिचार के, जपै निरन्तर नाम।
ध्यान करत हो जाय सो, हरि का रूप ललाम॥

नानक दुखिया सब संसारा।
जो सुखिया सो नाम अधारा॥

सच्चित आनन्द रूप हो, वाह गुरुसद्गुरुनाम।
नाम भेद जिन पाइयो, पूरण हो ये काम॥
श्वास श्वास पै नाम भज, श्वास न बिरथा खोय।
ना जाने इस श्वास का, आवन होय न होय॥
कथा कीर्तन करनकी, जाके निश दिन रीति।
कह कबीर वा दास से, निश्चय कीजै प्रीति॥

आयो प्रभु शरणागती, किरपा सिन्धु दयाल।
एक अक्षर हरि मन बसै, नानक होत निहाल॥
गोविंद गुण गायो नहीं, जन्म अकारथ कीन।
कहनानक हरि भजमनां, जेहिबिधिजलको मीन॥
बृद्ध भयो सूझे नहीं, काल जो पहुंचो आन।
कह नानक नर बावरे, क्यों न भजे भगवान॥
जेहि सुमिरे गति पाइये, तेहि भजरे तू मीत।
कह नानक हरि भज मना, अवधि घटत है नीत॥
घट घट में हरि जू बसे, संतन कह्यो पुकार।
कह नानक तेहि भजमनां, भवनिधिउतरहिपार॥
भय नाशन दुरमति हरन, गतभय हरिको नाम।
निशदिन जो नानक भजे, सफल होय तेहि काम॥
जिह्वागुणगोबिंदभजु, करण सुनहु हरिनाम।
कह नानक सुनरे मना, परै न जम के धाम॥
जो प्राणी ममता तजै, लोभ मोह अहंकार।
कह नानक आपुन तरै, औरन लेत उबार॥
प्राणी कछू न चेतहीं मन माया के अन्ध।
कह नानक बिन हरिभजन, परत ताहि यम फंध॥

साथ न चाले बिन भजन, विषिया सकली छार।
हरिहर नाम कहौ मना, नानक यह धनसार॥
मन माया में फंस रह्यो, बिसर्यो गोविंद नाम।
कहनानक हरि भज मना, जीवन कौने काम॥
सुख में बहु संगी भये, दुख में संग न कोय।
कह नानक हरि भज मना, अंत सहाई होय॥
जन्म २ भरमत फिर्यो, मिट्यो न यम को त्रास।
कह नानक हरि भज मना, निर्भय पावहिबास॥
चिन्ता छोड़ जो अड़ रहै, सुरत शब्द में राख।
गुरू सहायक होत हैं, सन्तों की है साख॥
कबीर मन तो एक है, भावे तहां लगाय।
भावै हरिकी भक्ति कर, भावै विषय कमाय॥
कबीर चुधा कूकरी, करत भजन में भङ्ग।
याको टुकड़ा डार कर, सुमिरन करौ निशंक॥
नामरतन धन मुज्झ में, खान खुली घट माहिं।
सेंत मेंत हीं देत हूं, गाहक कोई नाहिं॥
दुख में स्मरन सब करें, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे होय॥

सभी रसायन हम करी, नहीं नाम सम कोय ।
रञ्चक घट में संचरे, सब तन कंचन होय ॥
हरि का सुमिरन छोड़ के, पाल्यो बहुत कुटुम्ब ।
धन्धा करता मर गया, भाई रहा न बन्ध ॥
जागन से सोवन भलो, जो कोइ जाने सोय ।
अन्तर लवलागी रहै, सहजहि सुमिरन होय ।
बाद विबाद बिस घना, बोले भहुत उपाध ॥
मौन गहे सबकी सहे, सुमिरे नाम अगाध ॥
पढ़ना गुनना चातुरी, यह तो बात सहल ।
कामदहन मन बस करन, गगन चढ़न मुशकल ॥
नाम भजो मन बस करो, यही बात है तन्त ।
काहे को पढ़ पच मरो, कोटिन ज्ञान ग्रन्थ ॥
कबीर मन गाफिल भयो, सुमरन लागे नाहिं ।
धनी सहैगा त्रासना, जमकी दरगह माहिं ॥
कबीर यह मन लालची, समझे नाहिं गँवार ।
भजन करन को आलसी, खाने को हुशियार ॥
आज कहै मैं कल भजूं, काल कहै फिर काल ।
आज काल के करत ही, औसर जासो चाल ॥

सुख के माथे सिल पड़ो, जो नाम हृदयसे जाय।
बलिहारी वा दुःखकी, जो पल २ नाम जपाय॥
सुमरन सुरत लगाय कर, मुखते कछू न बोल।
बाहर के पट देयकर, अन्दर के पट खोल॥
नाम जपत कन्या भली, साकित भला न पूत।
छेरी के गल गलथना, जामें दूध न मूत॥
नाम जपत कुष्टी भला, चोय २ पड़े जो चाम।
कंचन देही काम किस, जा मुख नाहीं नाम॥
मारग चलते जो गिरै, ताको नाहीं दोस।
कहे कबीर बैठा रहै, तासिर करड़े कोस॥
कहता हूं कह जात हूं, कहा बजाऊं ढोल।
श्वासा खाली जाइ है, तीन लोक का मोल॥
सुमरन सो मन लाइये, जैसे कीट भिरंग।
कबीर बिसारे आपको, होय जाय तेहि रंग॥
सुमरन की सुधि यों करो, ज्यों गागर पनिहार।
हाले डोले सुरत में, कहै कबीर बिचार॥
लेने को हरिनाम है, देने को अन दान।
तरने को आधीनता, डूबन को अभिमान॥

जबहीं नाम हृदय धरा, भया पाप का नास।
मानों चिनगी आगकी, पड़ी पुरानी घास॥
सोता साधु जगाइये, करे नाम का जाप।
यह तीनों सोते भले, साकिन सिंह अरु सांप॥
हरि सम जग कछु बस्तु नहिं, प्रेम पन्थ सम पंथ।
सतगुरु सम सज्जन नहीं, गीता सम नहिं ग्रंथ॥
ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करै, आपौ शीतल होय॥
हाड़ जलै ज्यों लाकड़ी, केश जलै ज्यों घास।
सब जग जलता देखकर, भये कबीर उदास॥
तिरिया है दुरगंध अरु, रुधिर मूत्र का गेह।
सुख स्वपने रंचक नहीं, समझ हृदयमें एह॥
संसारी का टूकड़ा, नौ नौ आंगल दांत।
भजन करै तो ऊबरे, नातर फाड़े आंत॥
तू तू करता तू भया, मुझ में रहा न हूं।
वारी तेरे नाम पर, जित देखूं तित तूँ॥
कबिरा सूता क्या करे, उठ किन जपहुं मुरार।
इक दिन सोवत होयगो, लांबे पैर पसार॥

तीरथ न्हाए एक फल, संत मिले फल चार।
सद्गुरु मिले अनेक फल, कहैं कबीर बिचार॥
जाको राखे सांइयां, मार सके नहिं कोय।
बाल न बांका कर सके, जो जग बैरी होय॥
जो कछु आवे सहज में सोई मीठा जान।
कड़ुवा लागे नीम सा, जामें ऐंचा तान॥
राजदुवारे साधुजन, तीन बस्तु को जाय।
कै मीठा कै मान को, कै माया की चाय॥
अहरिन की चोरी करें, पुनि सुई को दान।
ऊंचे चढ़ चढ़ देखहीं, आवत कहां बिमान॥
संस्कृत है कूप जल, भाषा बहता नीर।
भाषा सतुगुरु सहित जो, सतगुरु गहर गंभीर॥
ब्रह्म रूप है ब्रह्मवित, ताकी बाणी वेद।
भाषा अथवा संस्कृत, करत भेद भ्रम छेद॥
गिरिये पर्वत शिखर से, पड़िये धरणि मंझार।
दुष्ट संग नहिं कीजिये, बूड़ें काली धार॥
कबिरा सोई पीर है, जो जाने परपीर।
जो पर पीर न जानहीं, सो काफर बे पीर॥

तरुवर सरवर संत जन, चौथे बरसे मेह।
परमारथ के कारणे, चारों धारें देह॥
कबिरा कलियुग कठिनहै, साध न मानै कोय।
कामी क्रोधी मसखरा, तिनका आदर होय॥
सबसे भली मधूकरी, भांति भांति का नाज।
दावा काहूका नहीं, बिना बुलाय राज॥
प्रीति वहुत संसार में, नाना बिधि की सोय।
उत्तम प्रीति सो जानिये, जो सतुगुरुसों होय॥
सम दृष्टि सतगुरु किया, मेटा भरम विकार।
जहिं देखूं तहिं एकही, साहिब का दीदार॥
खुला खेल संसार में, बांध न साके कोय।
घाट जगाती क्या करै, जो सिर बोझ न होय॥
मोमें इतना बल कहां, गाऊं गला पसार।
बंदे को इतनी घनी, पड़ा रहे दरबार॥
स्वामी हो संग्रह करे, दूजे दिनको नीर।
तरे न तारे औरको, यों कथ कहैं कबीर॥
कथा कीरतन कलि विषे, भवसागर को नाव।
कह कबीर जगतरन को, नाहीं और उपाव॥

कथा कीर्तन रात दिन, जाके उद्यम येह।
कह कबीर ता साधुकी, हम चरणनकी खेह॥
जब गुणका गाहक मिलै, तब गुण लाख बिकाय।
जब गुणका गाहक नहीं, तब कौड़ी बदले जाय॥
हीरा परखे जौहरी, शब्द को परखै साध।
जो कोइ परखै साधको, ताकी मती अगाध॥
साधू मेरे सब बड़े, अपनी अपनी ठौर।
शब्द विवेकी पारखी, वह माथे की मौर॥
रूखा सूखा पाय कर, ठंढा पानी पीय।
देख पराई चोपड़ी, क्यों ललचावै जीय॥
आधी अरु रूखी भली, सारी सों संताप।
जो चाहेगा चोपड़ी, तो बहुत करेगा पाप॥
कबीर साईं मुझ को, रूखी रोटी देय।
चोपड़ी मांगत में डरों, मत रूखी छिन लेय॥
खुश खाना है खीचड़ी, माहिं पडै टुक नोन।
मांस पराया खायकर, गला कटावै कौन॥
कहता हूँ कह जात हूं, कहा जु मान हमार।
जाका गल तुम काटहो, सो काट है तुमहार॥

कबीर सोता क्या करै, सोये होय अकाज,।
ब्रह्मा का आसन गिरा, सुनी काल की गाज ॥
कबीर सोता क्या करै,जागन की कर चौंप।
यह दम हीरा लाल हैं, गिन २ गुरु को सौंप ॥
जागन में सोवन करे, सोवन में लव लाय।
सुरत डोर लागी रहै, तार टूट नहिं जाय ॥
सब धरती कागज करूं, लेखन सब बनराय।
सात सिंधुकी मसि करूं, हरिगुण लिखा न जाय ॥
मैं अपराधी जन्म का, नख शिष भरा विकार।
तुम दाता दुख भंजना, मेरी करौ सम्हार ॥
भक्ति दान मोहि दीजिये, गुरु देवन के देव।
और नहीं कुछ चाहिये, निशदिन तुमहारी सेव ॥
दोष पराया देखकर, चले हंसत हंसत।
अपना याद न आवही, जाका आदि न अंत ॥
निंदक से कुत्ता भला, जो हठ कर मांडे रार।
कुत्ता से क्रोधी बुरा, जो गुरुहि दिवावे गार ॥
कबीर मेरे साध की, निंदा करौ मत कोय।
जो पै चंद्र कलंक है, तो उजियारो होय ॥

सातों टापू में फिरा, जंबू द्वीप दे पीठ।
निंदा पराई न करे, सो कोई बिरला डीठ॥
सांई आगे सांच हौ, सांई सांच सुहाय।
भावें लंबे केश कर, भावें घोट मुंडाय॥
सांचे कोई न पतीजई, झूँठे जग पतियाय।
गली गली गोरस फिरै, मदिरा बैठ बिकाय॥
सांचे शापन लागही, सांचे काल न खाय।
सांचे को सांचा मिलै, सांचे माहिं समाय॥
प्रेम प्रीतिका चोलना, पहिर कबीरा नाच।
तन मन वापर बारहीं, जो कोई बोलै सांच॥
सांच बिना सुमरण नहीं, भाव बिन भक्ति न होय।
पारस में परदा रहै, कंचन किस बिध होय॥
कबीर लज्जा लोक की, बोले नाहीं सांच।
जान बूझ कंचन तजै, क्यों तू पकड़ै कांच॥
कोटि कर्म लागे रहैं, एक क्रोध की लार।
किया कराया सब गया, जब आया हंकार॥
आवत गाली एक है, उलटत होय अनेक।
कहै कबीर न उलटिये, वाही एक की एक॥

गाली से सब ऊपजे, कलह कष्ट औ मीच ।
हार चलै सो संत है, लाग मरे सो नीच ॥
ऐसी बानी बोलिये, मनका आपा खोय ।
औरन को शीतल करै, आपा शीतल होय ॥
बोली तो अनमोल है, जो कोइ जाने बोल ।
हिये तराज़ू तौल कर, तब मुख बाहर खोल ॥
कुबुध कमानी चढ़ रही, कुटिल बचनका तीर ।
भर २ मारे कान में, सालै सकल शरीर ॥
कुटिल वचन सबसे बुरा, जार करै तन छार ।
साधु बचन जलरूप है, बरसै अमृत धार ॥
चोट सहेली शेल की, पड़ते लेय उसास ।
चोट सहारे शब्द की, तास गुरू मैं दास ॥
शब्द बराबर धन नहीं, जो कोइ जाने बोल ।
हीरा तो दामों मिले, शब्द का मोल न तोल ।
शीतल शब्द उचारिये, अहं आनिये नाहिं ।
तेरा प्रीतम तुझमें, दुश्मन भी तुझमाहिं ॥
जहां दया तहं धर्म है, जहां लोभ तहं पाप ।
जहां क्रोध तहं काल है, जहां क्षमा तहं आप ॥

गुरु को छोटा जानकर, दुनिया आगे दीन।
जीवन को राजा कहें, माया के आधीन॥
चलो २ सब कोइ कहै, पहुंचे बिरला कोय।
एक कनक और कामनी, दुर्गम घाटी दोय॥
परनारी के राचने, सीधा नरके जाय।
तिनको यम छोडें नहीं, कोटिन करे उपाय॥
नारी की झांईं परत, अंधे होत भुजंग।
कबीर तिनकी कौन गति, जो नित नारीके संग॥
कामी क्रोधी लालची, इनसे भक्ति न होय।
भक्ति करै कोइ शूरमा, जात बरण कुल खोय॥
नारि पराई आपनी, भोगें नरके जाय।
आग आग सब एकसी, हाथ दिये जर जाय॥
नारि नशावे तीन गुण, जो नर पासे होय।
भक्ति मुक्ति ध्यान में, बैठ न सक्के कोय॥
एक कनक और कामिनी, तजिये भजिये दूर
गुरु बिच डारे अंतरा, यम देसी मुख धूर॥
नारी तो हम भी करी, जाना नहीं विचार।
जब जाना तब परिहरी, नारी बड़ी विकार॥

छोटी मोटी कामनी, सबही विष की बेल।
बैरी मारे दाँव से, वह मारे हँस खेल॥
कंचन तजना सहज है, सहज त्रिया का नेह।
मान बड़ाई ईर्षा, दुर्लभ तजनी येह॥
सुखको सागर शील है, कोइ न पावे थाह।
शब्द विना साधू नहीं, द्रव्य बिना नहिं शाह॥
चाह मिटी चिन्ता गई, मनुवां बे परवाह।
जिनको कछू न चाहिये, सोई शाहनशाह॥
मांगन गये सो मर रहे, मरें सो मांगन जाहिं।
तिनसे पहले वे मरें, जो होत कहत हैं नाहिं॥
मांगन मरण समान है, मत कोइ मांगो भीख।
मांगन से मरना भला, यह सत गुरुको सीख॥
अनमांगा तो अति भला, मांग लिया नहिं दोष।
उदर समाना मांग ले, निश्चय पावे मोष॥
मरजाऊं मांगूँ नहीं, अपने तनुके काज।
परमारथ के कारणे, मोहि न आवै लाज॥
कबीर यह मन मसखरा, कहूं तो माने रोश।
जा मारग साहिब मिलें, ताहि न चालें कोश॥

सुमरनकी सुधि यों करो, ज्यों सुरभो सुतमाहिं।
कहै कबीर चारो चरत, विसरत कबहूं नाहिं॥
सुमरनकी सुधि यों करो, जैसे दाम कंगाल।
कहैं कबीर विसरै नहीं, पल पल लेय संभार॥
कबीर सो मुख धन्य है, जिहि मुख निकसे राम।
देही किसकी वापुरो, पवित्र होय सब ग्राम॥
बात बनाई जग ठग्यो, मन परबोध्यो नाहिं।
कबीर यह मन ले गया, लख चौरासी माहिं॥
कबीर मन मैला भया, यामें बहुत विकार।
यह मन कैसे धोइये, साधो करो विचार॥
गुरु धोबी शिष कापड़ा, साबुन सिरजनहार।
सुरत सिला पर धोइये निकसे रंग अपार॥
यहतो गति है अटपटी, झटपट लखे न कोय।
जो मनकी खटपट मिटै, चटपट दर्शन होय॥
साधू भया तो क्या हुआ, माला पहरी चार।
बाहर भेष बनाइया, भीतर भरी भंगार॥
डाढ़ी मूछ मुड़ाय कर, हूआ घोटम घोट।
मनको क्यों नहिं मूडिये, जामें भरिहैं खोट॥

रात गंवाई सोयकर, दिवस गँवायो खाय।
हीरा जन्म अमोल था, कौड़ी बदले जाय॥
इस दुनियांमें आयकर, छोड़ देय तू ऐंठ।
लेना होय सो जल्द ले, उठी जात है पैंठ॥
कबीर सब जग निरधना, धनवंता नहिं कोय।
धनंवता सोइ जानिये, जाके रामनाम धन होय॥
कबीर ते नर अंध है, गुरु को कहते और।
हरि रूठे गुरु मेलसी, गुरु रूठे नहिं ठौर॥
मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपते, क्या लागत है मोर॥
पीया चाहै प्रेम रस, राखा चाहै मान।
एक म्यानमें दो खडग, देखा सुना न कान॥
कबीर लूटना है तो लूटले, राम नाम की लूट।
फिर पीछे पछतायगा, जब प्राण जांयगे छूट।
हरि जन तो हारा भला, जीतन दे संसार।
हारा तो हरिसे मिलै, जीता यम के द्वार॥
मन फुरना से रहित कर, जौनी बिधिसे होय।
चहे भक्ति चहे ध्यान कर, चहे ज्ञानसे खोय॥

गोधन गज धन बाज धन, और रत्न धनखान।
जब आवै संतोष धन, सब धन धूल समान॥
एक घड़ी आधी घड़ी, आधीमें पुनि आध।
भीखा संगति साधुकी, कटें कोटि अपराध॥
करत करत अभ्यास के, दुर्मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ही, शिलपर करत निशान॥
जननी जने तो भक्त जन, के दाता के शूर।
नाहीं तो तू बांझ रहु, काहि गंवावै नूर॥
अजगर करै न चाकरी, पन्छी करै न काम।
दास मलूका यों कहै, सबके दाता राम॥
भोजन छादन की नहीं, सोच करै हरिदास।
विश्वभरण प्रभु करत हैं, सो क्यों रहै निरास॥
गिरह गांठ नहिं बांधते, जब देवे तब खाहिं।
गोबिंद तिनके पाछे फिरें, मत भूखे रह जाहिं॥
माया सगी न मन सगा, सगा न यह संसार।
परशुराम या जीवको, सगासो सिरजनहार॥
जाको प्रेम पियास है, ताको नींद न भूख।
कह दुनीदास अमृत किये, जोजो सगले दूख॥
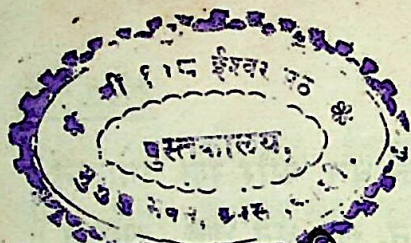
सुदामाकी बारहखड़ी ।

श्रीकमल नयन नारायण स्वामी । बसैं द्वारिका अंतरयामी ॥ वासुदेव संकर्षण छाजैं । प्रद्युम्न अनिरुद्ध विराजें ॥ कक्का कलियुग नाम अधारा । प्रभु सुमिरे भव उतरे पारा ॥ साधु संग कर हरि रस पीजै । जीवन जन्म सुफल कर लीजै ॥ खख्खा खोजो सकल जहाना । जाको गावैं वेद पुराना ॥ निर्भय नाम हरीका लीजै । चरण कमलको ध्यान धरीजै ॥ गग्गा गुण गोविन्दके गावो । माया जाल भूल जनि जावो ॥ धन जोबन तन रंग तरंगा । छिनमें छार होय यह अंगा ॥ घघ्घा घट घट बोले भाई । जलथलमें प्रभु रहे समाई ॥ ऊंच-नीच ज्ञान कर देखो । एकहि ब्रह्म सकलमें पेखो ॥ नन्ना निगम खोजकर देखो । दूजा और नहीं कोइ लेखो ॥ सप्त द्वीप और ब्रह्मण्डा ।

नामहि छाय रह्यौ नवखण्डा ॥ चच्चा चित निश्चय करि राखो। मिथ्यावाद झूठ मति भाखौ ॥ सत्य शब्दही होत प्रमाना। झूठ बचन सौ पाप समाना ॥ छछ्छा छल बल तजो विकारा। निर्मल नाम जपौ इकसारा ॥ कामक्रोधको तजो प्रसंगा। सदा रहो सन्तनके संगा ॥ जज्जा जपौ जगत्पति ईशा । जाको ध्यावें सुर तेंतीसा ॥ निशिवासर रहिये लौ लाई। हरिपद कमल सदा सुखदाई ॥ झझ्झा झेरन कीजो भाई। सिरपर काल रह्यौ मंडराई ॥ चेतन हो हरि शरणे रहिये। काल त्रास काहेको सहिये ॥ नन्ना निमिष निमिष हरिरूप निहारो। चितते ध्यान पलक नहिं टारो ॥ आठों याम रहो लौ लाई। चित चरननमें रहौ समाई ॥ टट्टा टारो जगको नाता। नहीं कोइ मात पिता सुत भ्राता ॥ हरिसो हितू न है कोइ अपना। जग व्यवहार रैनका स्वपना ॥ ठठ्ठा ठाकुर परम सनेही। जिन यह दीन्हीं सुन्दर

देही ॥ नर देहीको लाहो लीजै। प्रेम मग्न हो हरि रस पीजै॥ डड्डा डाँवा डोल चित जनि करो। हृदय ध्यान हरिको धरो ॥ आन देव काहेको ध्यावो। दृढ़ विश्वास विष्णु गुण गावो ॥ ढढ्ढा ढूंढ़न कहां जाइये भाई। रोम रोम प्रभु रहे समाई॥ पिण्ड ब्रह्माण्ड रह्यौ सम पूरा। सदा निकट हरि बाहि न दूरा ॥१४॥ नन्ना नाम हरिको लीजै। हरि भक्तनकी सेवा कीजै ॥ सांची भक्ति भगवानको भावै। प्रेम सहित रसना गुण गावै॥१५॥ तत्ता तेरी सकल कमाई। नर देही सुमिरनको पाई ॥ हरि भज गर्भवासते छूटो। राम नाम ऐसो धन लूटो ॥१६ ॥ थथ्था थोरा जीवन भाई। हरि बिन जन्म अकारथ जाई ॥ चेतन होय हरिनाम उचारो। तनका त्रिविध ताप निवारो ॥ १७ ॥ दद्दा देखत ही जगको व्यवहारा। माया जाल बन्ध्यो संसारा ॥ बन्धनते छूटन सो चहिये। शरण जाय सन्तनके रहिये ॥ १८ ॥ धध्धा धरनीधर हृदय धर भाई।

सन्तनके प्रभु सदा सहाई॥ सदा समीप निमिष नहिं टरई। भक्तजनोंकी सेवा करई॥ १९॥ नन्ना नेह हरीसों लावो। प्रेम मग्न रसना गुण गावो॥ द्विविधा धर्म तजो मन भ्राता। सन्त जननको कीजै साथा॥ २०॥ पप्पा पड़े पड़े सब जन्म गँवायो। गुणाबाद प्रभुको नहिं गायो॥ माया जाल भूल रह्यौ अन्धा। जन्म गवायो कर कर धन्धा॥ २१॥ फफ्फा फिर फिर परे मोहके फंदा। अजहूं न चेते मूरख अन्धा॥ गुरु चरणन की धर मन आसा। हरि भज मेटो यमकी त्रासा॥ २२॥ बब्बा बोलो अमृत बानी। स्नेह प्रीत रसना गुण सानी॥ हरि हीरा हृदय धरि राखो। कटु बचन मुखते मत भाखो॥ २३॥ भभ्भा भूल्यो मन समझावो। जासों भवजाल (जन) फेर न आवो॥ ऐसी भक्ति करो मन मेरा। जरा मरण होवै नहिं तेरा॥ २४॥ मम्मा मायाजाल भवसागर भारी। धीमर-काल मीन संसारी॥ जाल लिये यम फिरत

अहेरा। हरि विमुखन पर देत दरेरा ॥ २५ ॥ यय्या यह अवसर नहिं बार बारा। ताते पुनि पुनि करत पुकारा। मनवा मित्र तुम चतुर सुजाना। बिष रस छाड़ भजो भगवाना ।२६। ररा रटन हरीसों लावो। हीरा जन्म मत बाद गुमावो ॥ ऐसा हीरा जो गम जाई। अवसर चूके फिर पछताई ॥ २७ ॥ लल्ला लाल अमोलक मिली हरिनामा। तन भंडार जतन करि धरना। प्रभु लाल गुरु देव लखाया। तृष्णा लोभ सब दूर भगाया ॥ २८ ॥ बब्बा बिन गुरू हारि जैये। जासों वस्तु अगोचर लहिये ॥ बार बार नावों पद माथा। उन पद कमल चरण चितदाता ॥ २९ ॥ सस्सा सद्गुरुकी का करूं बड़ाई। महिमा मुखते बरनि न जाई ॥ चित लागा सद्गुरुके चरणों। रसना एक कहां लगि बरणों ॥ ३० ॥ षष्षा षींच लियौ गुरु अपनी ओरा। माया फंद पलकमें तोरा ॥ निर्भय भये पाप सब त्यागे। जब गुरु चरण

में चितलागे। ३१। शश्शा सोच विचार मिटे जिय जबते॥ दीपक ज्ञान दिये गुरु तबते नाश्यो तिमिर भयो परकाशा। मानों रवि पूरण करि आशा॥ ३२॥ हहा हारिगये पाप और पछतापा। श्री गुरुचरण कमल परतापा॥ जैसे धुंध चहूं दिशि घेरा॥ प्रंगटे भान जब भये उजेरा॥ ३३॥ लल्ला लेवे को हरिजू का नामा। देवे को अन्न दान समाना॥ धरने को प्रभुजी का ध्याना। सेवन को गुरु चरण समाना॥ ३४॥ छच्छा छाड़न विषय वृंदन जो चहिये॥ सत गुरुके शरनन हो रहिये॥ नाम मधुर रस पिवो सुजाना गर्भबास नहीं होय अपना॥ ३५॥ बांर, खडी आनंद गुण गाऊं। सब संतन को सोस निवाऊं॥ दीन पतित है दास सुदामा। नमस्कार गुरुदेव समाना॥

इति श्री सुदामा जीकी वारहखडी

* समाप्त *

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

हरें राम हरे राम राम राम हरे हरे

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे